From the desk of director

म.प्र.विन्ध्य जैविक एण्ड हर्बल डवलपमेंट फाउन्डेशन

Organic Agri Export Zone Development Through Contract Farming

कोशिश कल के भारत के निर्माण की!

Vindhya Organic

किसान सहायता केन्द्रों का संचालन

तथा कृषक प्रशिक्षण एवं तकनीकी ज्ञान

Organic Production

Organic Production Marketing

Export

Vindhya Organic

बेहतर पर्यावरण की गारंटी

Organic Agri Export Zone Development Through Contract Farming

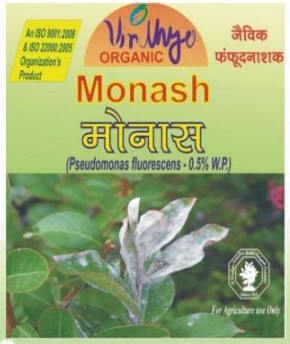

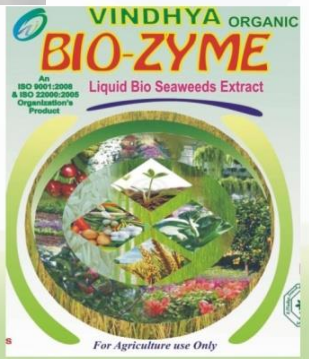

सम्पर्क करें -

An ISO 9001:2008 & ISO 22000:2005 Institute

म.प्र.विन्ध्य जैविक एण्ड हर्बल डवलपमेंट फाउन्डेशन

कार्पोरेट कार्यालय –1977, विजयनगर, जबलपुर – 482002

Ph. 0761-6499426, Fax - 0761-4071757, Mobile - 8959333311, 9685327362 email - rmlimd@gmail.com

Website - www.rmlivjhdf.org

An ISO 9001:2008 & ISO 22000:2005 Institute

म.प्र. विन्ध्य जैविक एव हर्बल डवलपमेंट फाउन्डेशन

M.P.Vindhya Jaivik & Herbal Development Foundation

GO Green INDIA

किसान सहायता केन्द्र

Vindhya Organic

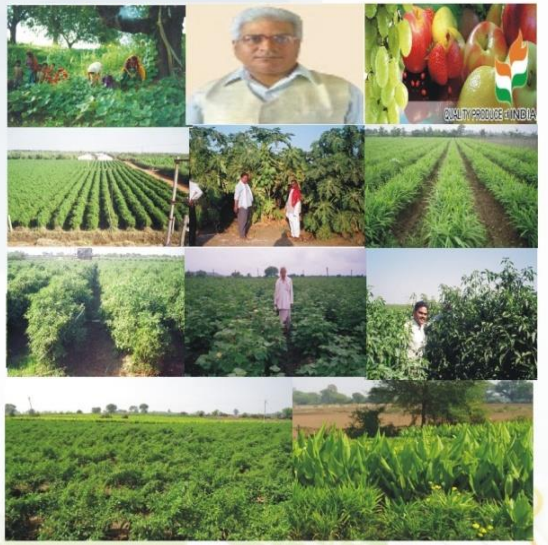

जैविक एवं औषधीय कृषि ही कृषको को सम्पन्न बनाने में सहयोगी है।

जैविक उत्पाद ब्रांड - "विन्ध्या आर्गेनिक"

CIN-U01500MP2023PTC065628 Foundation year 2023-2024 www.mpvjindia.com,www.mpvjhdf.com

FSSAI -21419170001544 GST-23AAMCM7362A1ZN Email-mpvjhdfmd@gmail.com ,rmlimd@gmail.com

MPVJH INDUSTRIAL DEVELOPMENT PRIVATE LIMITED

MPVJHERBAL &INDUSTRIAL DEVELOPMEMT Ltd.

Vindhya Organic

73KATANGIROAD,PARASURAMWORD,KARAMETA-JABALPUR (MP)482002

0761-4926178,8989891359,7067933880,6261564005

एक परिचय :–

म.प्र. विन्ध्य जैविक एवं हर्बल डवलपमेंट फाउन्डेशन द्वारा जैविक एवं औषधीय कृषि तथा सुगंधित फसलो की खेती, वर्मी कम्पोस्ट एवं जैविक कीट नियंत्रण जैविक कृषि तथा औषधीय कृषिकरण,जैविक खाद्यान्न एवं जैविक कीटनाशक उत्पादन, पुष्पोत्पादन,हर्बल एवं औषधीय उपउत्पाद निर्माण एवं विपणन हेतु विभिन्न कार्यक्रमों कर संचालन किया जा रहा है। जिसके लिये संस्थान द्वारा म.प्र. राज्य के रीवा,शहडोल एवं जबलपुर संभाग के समस्त जिलों तथा उ.प्र. राज्य के गोरखपुर, इलाहाबाद, आजमगढ़ संभाग के समस्त जिलो का चयन किया गया है।

म.प्र. विन्ध्य जैविक एवं हर्बल डवलपमेंट फाउन्डेशन द्वारा म.प्र. में जैविक कृषि कार्यक्रम प्रारम्भ किया गया है। संस्थान द्वारा जैविक कृषि को बढ़ावा देने के लियें उन्नत एवं अधिक उत्पादकता वाली फसलो जैसे-धान, सोयाबीन, मटर, गेंहूँ, चना, मसूर,राई,गन्ना आदि की खेती/उत्पादन जैविक विधि द्वारा करने के लिये कृषको के पंजीयन का कार्य किया जा रहा है। जिससे कृषको को रासायनिक खाद,रासायनिक कीटनाशक, नींदानाशक आदि के उपयोग के विना सिर्फ जैविक पदार्थो के उपयोग द्वारा फसल का उत्पादन किया जावे। कृषक अपने खेतो में गोबर खाद, नाडेफ पद्धति द्वारा तैयार किया गया कम्पोस्ट,वर्मी कम्पोस्ट,गोबर गैस संयत्र से निकली खाद,नीम खली एवं अन्य बायो उत्पादो का प्रयोग कर फसल प्राप्त करेगें जैविक खाद,कीटनाशक एवं अन्य बायो उत्पादो का प्रबन्धन एवं समुचित उपलब्धता एवं कृषको के मार्गदर्शन के लिये जगह-जगह किसान सहायता केन्द्रों का संचालन किया जा रहा है।

मानचित्र : परियोजना कार्यक्षेत्र म.प्र. व उ.प्र. राज्य – एग्री एक्सपोर्ट जोन एवं गो–ग्रीन इण्डिया परियोजना

संस्थान द्वारा सभी प्रकार की औषधीय,सब्जी एवं फल उत्पादन के लिये भी जैविक पद्धति का अनुसरण किया जायेगा। संस्थान द्वारा तकनीकि ज्ञान से लेकर उत्पादन तक के विभिन्न पहलुओ एवं बीज, खाद, दवा एवं विपणन की समस्त सुविधायें प्रदान की जावेगी।

संस्थान १९९४ से लगातार किसान बंधुओ की समस्याओं,भ्रान्तियों को दूर करता आ रहा है। किसानो की मूलभूत समस्याओ का शोध एवं उसका हल किसानो के ही तरीके से (जैविक विधि)करवाना मूल उद्देश्य है।

किसानो के उत्पादो की कीमतें क्यो लगभग स्थिर है?क्या कभी आपने विचार किया है?यह संस्थान उत्पादो के मूल्य में वृद्धि के उपाय भी खोजता है। यथा जैविक गेंहूँ -रासायनिक गेंहूँ से महंगा, अधिक

जैविक खेती क्यों

रासायनिक उर्वरको के अंधाधुंध प्रयोग से मृदा उत्पादकता में कमी आ रही है। मृदा में आवश्यक पोषक तत्वों की कमी या उपलब्धता में हास हुआ है। जैविक रीति से किसान अपने घर में केंचुए की मदद से वर्मी कम्पोस्ट तैयार कर रासायनिक खादो के दुष्प्रभावों पर नियंत्रण कर सकता है। तथा उत्पादन लागत कम करते हुए अतिरिक्त आय प्राप्त कर सकता हैं। मनुष्य के स्वास्थ्य पर भी रासायनिक उर्वरक घातक प्रभाव छोड़ रहे है।

आज देश में सिंचित क्षेत्रों में रसायनो पर आधारित सघन कृषि करने के कारण भूमि का उपजाऊपन धीरे धीरे कम होता जा रहा है। तथा उत्पादन का स्तर बनाये रखने के लिये लगातार रसायनो की मात्रा बढाई जा रहा है। एक स्तर पर आकर आर्थिक दृष्टि से ऐसी खेती अनुप्रयोगी हो सकती है। दूसरी ओर असिंचित क्षेत्रो में रसायनिको खादो का प्रयोग कम तो हो रहा है। किन्तु पौध संरक्षण रसायनो का उपयोग वन क्षेत्रो में भी किया जा रहा हैजो भूमि व उत्पादो को जहरीला बना रही है।

जैविक खेती की ओर अग्रसर होने के मुख्य कारण इस प्रकार है।

१. रसायनो की खपत बढाते जाने के बावजूद उत्पादन स्तर गिरता है तथा रसायनो की कीमत मे वृद्धि के कारण उत्पादन लागत में वृद्धि हो रही है।

२. ऊर्जा के साधनो (डीजल) विधुत की कीमत में निरंतर हो रही वृद्धि के कारण उत्पादन लागत में वृद्धि हो रही है।

३. रसायनो की खपत बढ जाने से भूमि का दूषित हो जाना तथा भूजल मे प्रदूषण की मात्रा में वृद्धि से मानव स्वास्थ्य पर विपरीत प्रभाव पड़ना प्रारम्भ हो गया है।

४. लाभदायक जीवो की संख्या में लगातार कमी हो जाने से जैविक असंतुलन बढ गया है।

५. रसायनो के बढते उपयोग से पशुओ के खाद्य चारे आदि में रसायनो की मात्रा बढ जाने से दुग्ध व दुग्ध उत्पादन में विषैले तत्वो की वृद्धि के कारण मानव स्वास्थ्य को खतरा बढ रहा है।

एग्री एक्सपोर्ट जोन तथा इन्फोसिटी विकास परियोजना

संस्थान द्वारा एग्री एक्सपोर्ट जोन तथा इन्फोसिटी विकास परियोजना द्वारा कृषको को समस्त प्रकार की अत्याधुनिक एवं जैविक कृषि तकनीकि का प्रायोगिक ज्ञान प्रदान करते हुये जैविक एवं हर्बल उत्पादन में कृषको की विभिन्न समस्याओ जैसे -

- मृदा एवं फसल परीक्षण
- जैविक कृषिकरण का नवीनतम् ज्ञान
- जैविक कीटनाशक एवं उर्वरक/खाद निर्माण
- कृषि आधारित लघु उद्योग इकाई की स्थापना एवं संचालन

एग्री एक्सपोर्ट जोन एवं गो-ग्रीन इण्डिया परियोजना के प्रमुख उद्देश्य एवं कार्य :-

नर्सरी एवं औषधी विकास :-फलदार,अलंकृत बागवानी,पुष्पोत्पादन एवं औषधीय पौधों की नर्सरी विकास प्रशिक्षण एवं विपणन का ज्ञान व सहयोग प्रदान कर बागवानी,औषधीय व सब्जी उत्पादन को बढ़ावा देने का कार्य संस्थान द्वारा किया जा रहा है।

जेट्रोफा (रतनजोत) उत्पादन एवं बायो डीजल उत्पादन :- कृषको को ईधन की उपलब्धता के लिये आत्मनिर्भर एवं कृषि को एक पर्यावरणीय मित्र उद्योग के रुप में विकसित करना है। जेट्रोफा अर्थात रतनजोत बायोडीजल का एक उत्कृष्ट स्त्रोत है ।

जैविक खाद एवं कृषि इनपुट तथा जैविक कीट नियन्त्रण का निर्माण :- कृषको को जैविक विधि की तरफ प्रेरित करने के लिए वर्मीपिट निर्माण, जैविक खाद निर्माण, जैविक कीटनाशकों का निर्माण, प्रशिक्षण तथा जैविक कम्पाउन्ड निर्माण एवं विपणन का कार्य संस्थान द्वारा कराया जाता है। बेरोजगारी उन्मूलन हेतु बेरोंजगार युवाओं एवं कृषको को उपरोक्त प्रशिक्षण प्रदान किया जाता है।

औषधीय तथा सुगंधित फसलो की खेती :- हर प्रकार के औषधीय के बीज/प्लांटिग मटेरियल/कंद की खेती संस्थान के प्रशिक्षित वैज्ञानिक के देखरेख में होता है। बीज की उपलब्धता से लेकर विपणन की व्यवस्था संस्थान उपलब्ध करवाता है। जिससे आप प्रति एकड़ २० हजार से ९लाख रुपये तक की आय प्राप्त कर सकते है।

स्वरोजगार प्रूरक प्रशिक्षण, निर्माण एवं शोध कार्यक्रमों का संचालन- कृषि आधारित डेरी एवं पशुपालन, सब्जीउत्पादन एवं फल संरक्षण, उद्यानीकरण एवं नर्सरी विकास,जैविक कृषि तथा औषधीय कृषिकरण, लघु उद्योग :- जैसे - बांस बर्तन एवं खिलौनो का निर्माण, अगरबत्ती निर्माण,कुटीर उद्योग, इलेक्ट्रिक-इलेक्ट्रानिक्स,हर्बल उप उत्पाद निर्माण,लाख उत्पादन तथा बीज उत्पादन आदि

शोध कार्य :-जैव विविधता संरक्षण,वन्यजीव सुरक्षा एवं फसलोत्पादन,पुष्पोत्पादन एवं औषधीय कृषि,समग्र स्वच्छता एवं स्वस्थ जीवनशैली,जैविक खाद्यान्न एवं जैविक कीटनियंत्रण जल एवं मृदा संरक्षण,स्व सहायता समूहो का गठन एवं विकास तथा बेरोजगारी उन्मूलन।

उत्पादन एवं विपणन कार्यक्रम :–